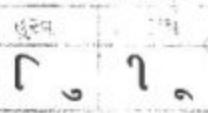


જોડણી એ ભાષાશૂદ્ધિનું અતિ મહત્વાનું અંગ છે. જોડણી એટલે લેખનપદ્ધતિ, શબ્દમાં કયા અકારો લખવા - જોડવા તેની રીત. જોડણીના નિયમો એટલે શબ્દો કેમ લખવા એ અંગેના નિયમો, (એટલે કે શબ્દની અંદર જે અકાર જેમ બોલાતા હોય તેમ લખાય) જોડણીના કેટલાક નિયમો ધ્યાનમાં રાખવાચી જોડણીની સામાન્ય ભૂલો નિવારી શકાય છે.

કોઈને પ્રશ્ન થાય કે શબ્દો જેમ બોલાતા હોય એમ લખાય. એટલે કે શબ્દની અંદર જે અકાર જેમ બોલાતા હોય તેમ લખાય. એમાં વળી નિયમોનો શી જરૂર ? પણ એમ નથી. ભાષા બોલાય છે એમ હંમેશાં લખાતી નથી. લાખી શકાતી પણ નથી. કોઈ પણ પ્રજામાં બોલાયાલના ઘણા તફાવત હોય છે બોલાનું હોય એમ લખાય તો એકનું લખેણું બીજો સમજું ન શકે એનું પણ બને. તેથી શિષ્ટ વ્યવહાર માટે એક ચોક્કસ લેખનપદ્ધતિ નિપાત્તવાની પડે છે અને જોડણીના નિયમો પણ ઘડવા-રચવા પડે છે.

ગુજરાતી જોડણીના નિયમો

* યાદ રાખો *



૧ અર્થાત, કવચિત, કદાચિત, કિચિત, સાકાત, અક્સમાત (એકાગ્રેકના અર્થમાં) માં છેલ્લો અકાર વંજનાત (ખોડો) છે.

૨ નીચેના પૂર્વગો છુસ્ત હોવાથી તે પરથી બનતા શબ્દોમાં છુસ્ત હોય 'ઇ' આવે છે.
★ પૂર્વગો : અતિ, અધિ, અતિમ, પરિ, પ્રતિ, નિ, નિઃ, અનુ, વિ, ઉપ, સુ, કુ, પુનઃ બહિ: પુર

- દા.ત. : અતિ : અતિશાય, અતિશાન
અધિ : અધિકારી, અધિકિન, નિ : નિયમ
નિ : નિર્દૂષ, નિર્દૂન, પરિ : પરિચિત, પ્રતિ : પ્રતિનિધિ
વિ : વિજ્ઞાન, અનુ : અનુદૂષ, ઉપ : ઉપચાર
સુ : સુવિચાર, કુ : કુરુન, પુનઃ : પુનશ્ચ
બહિ : બહિગોંગ,

૩ શબ્દના છેઠે આવતા હોય, ઈનમાં દીર્ઘ 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : આતીય, ભાગીય, માનાયી, રક્ષાયી

૪ શબ્દના છેઠે ભૂતકૂદાની તરીકે આવતા 'ઈત' માં છુસ્ત હોય 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : અંડિત, લિંગિત, પતિત

૫ શબ્દમાં આવતા 'ઈકા' માં દીર્ઘ 'ઇ' છે.

- દા.ત. : નિરીક્ષા, પરીક્ષા, નિરીક્ષા

૬ નામ પરથી વિશેષજ્ઞ થતાં હોય ત્યાં 'ઈક' પ્રત્યયમાં છુસ્ત હોય 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : માનસિક, વાર્પિક, પ્રાચ્યિક

૭ 'ઈકા' પ્રત્યયમાં છુસ્ત હોય 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : આજીવિકા, લેભિકા

૮ શબ્દમાં આવતા (રેફ) પૂર્વ 'ઈ-ઓ' દીર્ઘ આવે છે.

- દા.ત. : તીર્થ, મૂર્તિ, સ્કૂર્તિ, પૂર્વ

૯ 'ઓ' પહેલાં આવતો 'ઇ' છુસ્ત હોય છે.

- દા.ત. : પ્રિય, કાગ્રિમ, હોશિયાર, ખાસિયાન, કેચિયો

૧૦ શબ્દના છેઠે આવતા 'ઈશ', 'ઈન્દ્ર' માં દીર્ઘ 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : જગાદીશ, જિરીશ, રંગનીશ, યોગીન્દ્ર, રવીન્દ્ર, હરીન્દ્ર

૧૧ 'વતી' અને 'મતી' - વાળીના અર્થમાં હોય ત્યાં દીર્ઘ 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : કલાવતી, ભગવતી, ચારુમતી, હનુમતી, શ્રીમતી

૧૨ શબ્દના છેઠે આવતાં 'લ્લૂક' અને 'ગીરી' માં દીર્ઘ 'ઓ' અને 'ઇ' આવે છે.

- દા.ત. : નિમણૂક, વર્તણૂક, કામગીરી, યાદગીરી

૧૩ શબ્દમાં જોડાકાર પહેલાંના 'ઇ', 'ઉ' છુસ્ત હોય છે.

- દા.ત. : શિષ્ય, મુદ્દો, લુંચો, સિક્કો, પુષ્કા, મળુષ, હુલ્લ

૧૪ એકાકારી શબ્દોમાં દીર્ઘ 'ઇ', 'ઉ' આવે છે.

- દા.ત. : શી, રૂણી, ઝી, ઝુ, પી, લુ

૧૫ અનુસ્વાર સાથેના એકાકારમાં છુસ્ત હોય 'ઉ' આવે છે.

- દા.ત. : દું, શું, તું

૧૬ બે અકારવાળા શબ્દમાં પહેલાં અકારમાં 'ઉ' કે 'ઓ' દીર્ઘ આવે.

- દા.ત. : ભીડ, ભીલ, ટીલ, ભીં, ભૂલ, કૂલ, કૂં, દૂલ

૧૭ નજી અકારના શબ્દોમાં ગુરુ અકાર પહેલાં છુસ્ત હોય 'ઇ', 'ઉ' હોય. જ્યારે લખું અકાર એટલે - દીર્ઘ અકારો] [લખું અકાર - છુસ્ત અકારો]

- દા.ત. : કિનારો, સુધ્યાર, જેઝૂત, મજૂર, જિલાડી

૧૮ ચાર કે વધુ અકારવાળા શબ્દમાં પ્રથમ 'ઉ', 'ઇ' છુસ્ત હોય છે.

- દા.ત. : હિલાયાલ, જિસકોલી, વિલાયત, કિલડિલાટ, ઉલાપોર, ઉપ્યોગ

૧૯ 'ઇ' કે 'ઉ' પછી જોડાકાર આવ્યો હોય તો 'ઇ' કે 'ઉ' છુસ્ત કરવાં.

- દા.ત. : ધર્મની, ધર્મિતાલ, કિલ્લો, ચિઠી, ચિલ્લો, શિસ્ત

૨૦ કેટલાક શબ્દો બોલતાં ભાર આવે ત્યાં દીર્ઘ 'ઇ', 'ઉ' આવે.

- દા.ત. : દાગીન્દ્ર, જેણીલો, નતીંલો, નમૂનો

૨૧ શ્રેષ્ઠતાર્દ્ધક પ્રત્યયમાં 'ઈંદ્ર' નહીં પરંતુ 'ઈક' છે.

- દા.ત. : કનિશ, વરિશ, વસિશ, ધર્મિશ

૨૨ અંતમાં 'ઉ' આવતો હોય તો 'નુ' ની પહેલાં 'ઉ' છુસ્ત આવે.

- દા.ત. : ભજિની, નલિની, રાજિની, મૃજાલિની.

૨૩ માનાર્થ નારી જ્ઞાતિમાં બહુવચ્ચન વપરાય છે. ત્યારે અનુસ્વાર આવે છે.

- દા.ત. : મોટા બા, સાસુ ગથ.

૨૪ ગુજરાતી ભાષામાં સાતમી વિભક્તિનો પ્રત્યય 'મા' છે. તેમાં અનુસ્વાર લખવો જ જોઈએ.

- દા.ત. : ધરમાં, દુકાનમાં, જેતરમાં

★ बे शब्द जोड़ाय त्यारे अमना स्वर-व्यंजनमां के परिवर्तन आवे तेने 'संधि' कहे छे. OR

★ बे स्वरो, बे व्यंजनो, स्वर अने व्यंजन, विसर्ग अने स्वर, विसर्ग अने व्यंजनाना अमुक नियमो प्रभावेना असपरम जोड़ाने संधि कहेवामां आवे छे.

★ संधिना प्रकार : संधिना जैसा प्रकार छे.

• स्वरसंधि

• वांशसंधि

• विसर्गसंधि

(१) **स्वरसंधि :**

ज्यारे एक शब्दने हेतु स्वर होय अने ते पछीना औज शब्दनी शब्दातमां पछ स्वर होय तो ते बंगे स्वरो मणी जह नवो जु स्वर उत्पन्न थाय छे. आ रीते थता न्यायाने स्वरसंधि कहे छे.

$$(1) \text{ अ } + \text{ ए } = \text{ ओ}$$

(1) सूर्य + अस्त = सूर्यो

(2) स्व + अधीन = स्वाधीन

$$(2) \text{ अ } + \text{ आ } = \text{ ऋंग}$$

(1) वात + आवरण = वावरण

(2) सिंह + आसन = सिंहासन

$$(3) \text{ अंग } - \text{ अंग } = \text{ अंग}$$

(1) मधा + आशय = माशय

(2) विद्या + आलय = विचालय

$$(4) \text{ अस } + \text{ अ॒ } = \text{ अंग}$$

(1) विद्या + अर्था = विचार्दा

(2) भाषा + अन्तर = भावान्तर

$$(5) \text{ उ } + \text{ ई } = \text{ ऊ}$$

उ + ई = ऊ

ऊ + ई = ऊ

ऊ + ई = ऊ

(1) हरि + ईक्षा = हरीक्षा

(2) परि + ईक्षा = परीक्षा

(3) देवी + ईक्षा = देवीक्षा

(4) योगी + ईक्षर = योगीक्षर

$$(6) \text{ उ } + \text{ औ } = \text{ ऊंग}$$

उ + औ = ऊंग

ऊंग + औ = ऊंग

ऊंग + औ = ऊंग

(1) भानु + उदय = भानूदय

(2) सिंधु + उर्मि = सिंधुर्मि

(3) वधु + उल्लास = वधूल्लास

(4) वधु + उर्मि = वधूर्मि

$$(7) \text{ अ } + \text{ औ } = \text{ ओंग}$$

अ + औ = ओंग

ओंग + औ = ओंग

ओंग + औ = ओंग

(1) ईक्षर + ईक्षा = ऊंखेक्षा

(2) राम + ईक्षर = रामेक्षर

(3) मधा + ईश = मधैश

(4) मधा + ईन्द्र = मधैन्द्र

$$(8) \text{ अ } + \text{ औ } = \text{ ओंग}$$

अ + औ = ओंग

ओंग + औ = ओंग

ओंग + औ = ओंग

(1) सूर्य + उदय = सूर्योदय

(2) गंगा + उदय = गंगोदय

(3) नव + उडा = नवृडा

(4) गंगा + उर्मि = गंगुर्मि

$$(9) \text{ अ } + \text{ ऋ } = \text{ ओंग}$$

अ + ऋ = ओंग

ओंग + ऋ = ओंग

(1) देव + ऋषि = देवर्षि

(2) मधा + ऋषि = मधैर्षि

$$(10) \text{ अ } - \text{ ऋ } = \text{ अ॒ंग}$$

अ - ऋ = अ॒ंग

अ॒ंग + ऋ = अ॒ंग

(1) एक + एक = एक्टे

(2) परम + और्ध्वर्थ = परम॑र्ध्वर्थ

(3) गंगा + एकता = गंगेता

(4) मधा + और्ध्वर्थ = मधैर्ध्वर्थ

$$(11) \text{ अ } + \text{ ऋ } = \text{ ओंग}$$

अ + ऋ = ओंग

ओंग + ऋ = ओंग

(1) परम + और्ध्व = परम॑र्ध्व

(2) गंगा + और्ध्व = गंग॑र्ध्व

(3) उत्तम + और्ध्वर्थ = उत्तम॑र्ध्वर्थ

(4) मधा + और्ध्वर्थ = मधैर्ध्वर्थ

● अ राते अ + अ - अ = अ॒ंग अ॒ंग लिह 'आ' थाय छे.

● अ राते अ + अ अ॒ंग अ॒ंग लिह 'आ' थाय छे.

● अ राते अ + अ ने 'आ' थाय छे.

● आ दाते आ + अ स्वर नजरल्या लिह 'आ' थाय छे.

● आ अमावास्या ई + ई पछौ ई + ई आवे तो 'ई' थाय छे.

● आ अमावास्या अ + अ॒ंग ई + ई आवे तो 'ओ' थाय छे.

● अ राते अ + अ॒ंग ई + ई आवे तो 'ओ' थाय छे.

● अ राते अ॒ंग ई + अ॒ंग ई + अ॒ंग अ॒ंग लिह 'अ॒ंग' थाय छे अने तेना पहेलानो स्वर उत्ते अ॒ंग थाय छे.

● अ राते अ॒ंग ई + अ॒ंग ई + अ॒ंग अ॒ंग लिह 'अ॒ंग' थाय छे.

● अ॒ंग अ॒ंग ई + अ॒ंग अ॒ंग अ॒ंग लिह 'ओंग' थाय छे.

(२) व्यंजन संधि अर्थः संधि वर्ते व्यंजन साथे स्वर ज्ञोड़ाय के व्यंजन नाथे लिए जाय तो व्यंजन संधि.

संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी	संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी
१. स + थ = श + थ	हुस्त + थक	हुश्क	९. छ + ल = लू + ल	तत + लीन	तल्लीन
२. स + ट = षू + ट	धनुसू + टंकार	धनुष्टंकार	१०. पढने अंते 'थ', 'जू' के 'श'	दिथू + अंबर	दिगंबर
३. स + श = विसर्ग + श	निसू + शष्ट	निःशष्ट	आवे तो तेनो श्वाय		
४. रू + थ = श्रू + थ	पुनरू + थ	पुनश्च	इ नो गु थाय		
५. रू + ट = स + ट	अंतरू + ताव	अंतस्ताव			
६. रू + श = विसर्ग + श	अंतरू + शोक	अंतःशोक			
७. द + प = त्र + प	सुहृद + प्रेम	सुखत्प्रेम			
८. त्र + म = नृ + म	सत्रू + मति	सन्मति	११. 'टू' नी पूर्व	चतुरू + पाई	चनुप्पाई
			'उ' + 'पू' = 'उ' नी 'पू'		
			१२. 'त्रू' + 'श' = 'त्रू' +	सत्रू + शास्त्र	सन्मात्र

(३) विसर्ग संधि

संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी
१. विसर्गनी पठेला अ होय अने विसर्गनी पछी अ के धोष व्यंजन आवे तो विसर्गनो ओ थाय छे.	शिरः + भिंगि अधः + गति सरः + झ	शिरोभिंगि अधोगति सरोझ
२. विसर्गनी पठेलां अ के आ सिवायनो स्वर होय अने विसर्गनी पछी स्वर के धोष व्यंजन आवे तो विसर्गनो श्वाय छे.	निः + आकार हुः + गंध धनुः + विद्या	निराकार हुर्गंध धनुविद्या
३. विसर्गनी पठेलां अ के आ सिवायनो स्वर होय अने विसर्ग नी पछी त्रु आवे तो विसर्गनो लोप थहि तेनी पठेलानो स्वर हीर्घ बने छे.	निः + रव निः + रोगी	नीरव नीरोगी
४. विसर्गनी पठेलां ठु के उ होय अने विसर्ग पछी कु खु पु आवे तो विसर्गनो खु थाय	निः + कृपट हुः + काण हुः + प्रथन	निर्कृपट हुक्काण हुप्रथन

संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी
५. विसर्गनी पठेलां अ होय अने विसर्ग पछी कु खु पु आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	अंतः + करण अंतः + पुर	अंतःकरण अंतःपुर
६. विसर्ग पछी त्रु के उ आवे तो विसर्गनो श्वाय छे - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो श्वाय अने - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो विसर्गनो श्वाय छे.	निः + छल हुः + त्र	निर्श्वल हुक्क
७. विसर्ग पछी त्रु खु के आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	निः + श्वास हुः + शासन	निर्श्वास हुशासन

संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी
५. विसर्गनी पठेलां अ होय अने विसर्ग पछी कु खु पु आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	अंतः + करण अंतः + पुर	अंतःकरण अंतःपुर
६. विसर्ग पछी त्रु के उ आवे तो विसर्गनो श्वाय छे - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो श्वाय अने - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो विसर्गनो श्वाय छे.	निः + छल हुः + त्र	निर्श्वल हुक्क
७. विसर्ग पछी त्रु खु के आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	निः + श्वास हुः + शासन	निर्श्वास हुशासन

संधि नियम	संधि करता पठेला	संधि कर्या पछी
५. विसर्गनी पठेलां अ होय अने विसर्ग पछी कु खु पु आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	अंतः + करण अंतः + पुर	अंतःकरण अंतःपुर
६. विसर्ग पछी त्रु के उ आवे तो विसर्गनो श्वाय छे - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो श्वाय अने - विसर्गनी पछी त्रु के आवे तो विसर्गनो श्वाय छे.	निः + छल हुः + त्र	निर्श्वल हुक्क
७. विसर्ग पछी त्रु खु के आवे तो विसर्ग कायम रहे छे.	निः + श्वास हुः + शासन	निर्श्वास हुशासन

कार्य-कार्य

- जुदा-जुदा अर्थवाणा बे के तेथी वधु शब्दों जोड़ाइने नवा अर्थवाणा एक शब्द बने छे तेने समान कहे छे.
- नवा रचायेला पढ़ने समस्त पढ़ के नामांजिक पढ़ कहेवामां आवे छे.
- शब्दोनी करकर करवी अने कहेवानी वातने संबंधमां कहेवी ऐ समासानु कार्य छे.
- समास = सम + मास. जेमां 'मन' एटले सरखु अने 'आत' एटले गोठवाई. पदोनी पाठ्य गोठवाईनी अवयवा नेटवे समान.

समास - विशेष

- सामासिक पढ़ बे पदोनु बनेलु होय, त्यारे पांडवा पूर्वपद अने अन्य पदने उत्तरपद कहे छे. जे सामासिक पदमां बेथी वधु पढ़ो होय तेमां पहेला पढ़ (पूर्वपद) अने छेल्वा पढ़ (उत्तरपद) नी अवयवा पढ़ मध्यमपद कहेवाय.
- समासानं बन्ने के (बे थी वधु होय त्यारे) भयांय पदोने अमनी वयेनो अने अमनो वाक्य साथेनो संबंध व्यक्त थाय ऐ रीते छुट्टी चालना कियाने विशेष कहे छे.
- समासानो विशेष करती वजते तेनां पढो वये संबंध दर्शावनार विभक्तिना अनुग (प्रत्यय) भूक्वामां आवे छे अथवा संबंधवाचक पढो भूक्तीने ऐ समासानो ग्राहक दर्शाववामां आवे छे.

१. इ. त. :	समासिक पढ़	विशेष
लान्डेन	लान्डे अने दाय	
वयेवाटे		वये कु वाटे

समासाना ग्राहक

- | | |
|----------------------|-------------------|
| (1) द्वन्द्व समास | (2) तत्पुरुष समास |
| (3) मध्यमपदलोपी समास | (4) उपपद समास |
| (5) कर्मधारय समास | (6) बहुवीहि समास |
| (7) अव्ययीभाव समास | |

समासाना ग्राहकोनी विस्तृत समाज

१. द्वन्द्व समास

- जुदा-जुदा अर्थवाणा शब्दों समान क्लामां एटले के सरखु महान् धरावता होय अने.
- तेमनी वये समुच्चय के विकल्पनो एटले के 'अने' अथवा 'के' नो संबंध होय तेने द्वन्द्व समास कहे छे.

१. इ. त. :	भाई	अने	बहेन
पूर्वपद	संबंधवाचक पढ़	उत्तर पढ़	
अन्य उदाहरण:	त्रिष्णायार	= त्रिष्ण के चार	
	मातापिता	= माता अने पिता	
	आबोहवा	= आब अने हवा	
	वेरेझेर	= वेर अने झेर	

२. तत्पुरुष समास

- जे समासमां प्रथम शब्द (पूर्वपद) पढ़ना शब्द (उत्तरपद) साथे विभक्ति संबंधी जोडायेल होय तेने तत्पुरुष समास कहे छे.
- सामान्य रीते आवा ग्राहकना समासमां उत्तरपद पढ़न अने पूर्वपद गाहा होय छे एटले के पूर्वपद करतां उत्तरपद वाहारे महात्वानु होय छे.

विभक्तिओं	कारक	प्रत्यय	उदाहरण (विभक्ति भाव)
१. प्रथमा	कर्ता	०, ए	—
२. द्वितीया	कर्म	०, ने	प्रमाण - प्रेमने वश
३. तृतीया	करश	थी, थकी, वडे	वास्तविक - योगीयुक्त
४. चतुर्थी	संप्रदान	माटे, वास्ते, काढे, साढे	देश माटे दाज
५. पंचमी	अपादान	मांथी, अंदरथी, उपरथी	चिंतामांथी मुक्त
६. षष्ठी	संबंध	नो, नी, नुं, ना	नाहुला - बाहुनुं वश
७. सप्तमी	अधिकरण	मां, अंदर, उपर	नारान - वनमां वास
८. अष्टमी	संबोधन	हे, अरे	—

३. मध्यमपदलोपी समास

- तत्पुरुष समासमां विभक्तिना प्रत्यय लाय पाम्या होय छे, ज्यारे आ ग्राहकना समासमां पूर्वपद अने उत्तरपद वये रहेलु 'मध्यम पढ़' लाय पामलु होय छे. विशेष करती वजते मध्यमपद उमदाने तो क तेनो अर्थ बराबर समजाय छे.

१. इ. त. :	आगगाडी	= नाना वड गालती गाडी
	घोडगाडी	= गाड्य वड चालती गाडी
	दीवादांडी	= दीवा लगावती दांडी
	आरामधुरथी	= आराम करवा माटेनी धुरथी
	द्वाखानुं	= द्वा माटेनुं आनुं
	दीवासाळी	= दीवा पेटावनारी साळी

४. उपपद समास

- पूर्वपद अने उत्तरपद साथे विभक्ति संबंधी जोडायेलु होय छे, पक्ष उत्तरपद कियापद परथी अनला शब्द लाय छे. कियाधातु होय छे.

१. इ. त. :	नीरक	= नीरमां जन्मनार
	पापडतोड	= पापडने ताडनार
	पगरभुं	= पगनुं रक्षा करनार
	ग्रंथकार	= ग्रंथना करनार
	गृहस्थ	= गृहमां रहनार
	आनंदजनक	= आनंदने जन्मावनार

५. कर्मधारय समास

- तत्पुरुष समासमां पूर्वपद अने उत्तरपद वये बीज्ञी समभी विभक्ति सुधीना संबंध होय छे. ज्यारे कर्मधारय समासमां बने पढो पहेली विभक्तिना संबंधी जोडायेलां होय छे. तेमां एक पढ विशेषण अने बीज्ञुं पढ विशेष छोय छे. अथवा बने पढ विशेषण होय छे.

- એટા : મહાદેવ = મહાન અથવા દેવ
 મહોત્સવ = મહાન ઉત્સવ
 કાળજીકાળી = કાળજી જીવી કાળી
 નરસિંહ = લિંગ જીવાન નર
 દેહલતા = દેહ પુરુષ લતા
 શાનસાગર = શાનદારી સાગર
 પરદેશ = વિદેશ (બહાર) દેશ

६. अद्वीतीय समाज

★ કર્મધારય સમાસની જેમ બહુવ્રીહિ સમાસમાં પુનપુન વિસત્તા અને તથા વિસત્તા હોય છે. છતાં આ બંને પ્રકારના સમાસ વચ્ચે એક તફાવત છે. કર્મધારય સમાસમાં બંને દ્વારા બનાવેલું વિસત્તા હોય છે જ્યારે બહુવ્રીહિ સુભાસમાં બંને પણ વચ્ચે બનાવેલું વિસત્તા હોય છે.

★ બહુવ્યાપ્તિ સમાસનો વિગ્રહ કરતી વખતે જેને, જેમને, જેનાં, જેમનાં, જેમાં, જેમનામાં વગેરે ‘જે’ સર્વનામના રૂપો વપરાય છે.

★ બહુગ્રાહી સમાસના બંને પદો વચ્ચે વિશેષજ્ઞતા વિરુદ્ધનો સંબંધ,
ઉપમાન - ઉપમેયનો સંબંધ હોય છે.

- | | | |
|------------|-----------|------------------------------------|
| • સ્લ. નં. | ગજાનન | = ગજના કેવું આનત (મુખ) કેવું છે તે |
| | ધર્મનિષ્ઠ | = ધર્મના અમની નિષ્ઠા છે એવો |
| | હતાશ | = હના રસાયા હત (ખતમ) થઈ છે તેવો |
| | એકચિત | = એકચિત કેમનું તે |
| | નકામું | = નકામ કર્નું તે |
| | ચોપગું | = ચાર છે પગ કર્ના તે |
| | મુશળધાર | = મુશળ કર્બી છે ધાર કેની તે |

7. अव्ययीभाव समास

★ જે સમાસ નાયન અથવા તરીકે વપરાયો હોય તેને અવ્યધીભાવ સમાસ કહે છે. પૂર્વપદ અવ્યય પર યથા, પ્રતિ વગેરે હોય અથવા તો નાના નમાન નાયય તરીકે વપરાતો હોય તેવા સમાસને અવ્યધીભાવ કહે છે.

- | | | |
|------------|-----------|----------------------------|
| • फृ. १. : | यथाशक्ति | = यथाशक्तिं प्रमाणे |
| | योतरक्ष | = यादे तरक्ष |
| | आबालवृद्ध | = आलंकृथी मांडी वृद्ध सुधी |
| | यथाबुद्धि | = भुदिं प्रमाणे |
| | प्रतिदिन | = प्रत्येक दिने |
| | यथार्थ | = योऽथ दीने |
| | रातोरात | = राते वा राते |

અલંકાર ઓળખાવો

★ અલંકાર એટલે વરેસાં-આનુભાવ. આભૂષણની સજ્જવટ શોભા અર્પે છે. ભાષામાં વાકીને સજ્જવટ કરવાવાળા શોભાવાળા રૂપને 'અલંકાર' કહે છે. ભાષાનું કામ શું? મનના ભાવ કે વિચારને પ્રગટ કરવાનું કર્મ ભાષાનું છે, પરંતુ ભાવ કે વિચારને અસરકારક અને આકર્ષક રીતે પ્રગટ કરવા ભાષા કે વાકીને સજ્જવટ કરવામાં તેને શશીગારવામાં તેને મનોહર બનાવવામાં જે રૂપ અર્પવામાં આવે તે 'અલંકાર' બને છે. અલંકારનો ઉપયોગ કવિતામાં થાય છે. પરંતુ તેનો ઉપયોગ ગધનિરૂપવામાં પણ થાય છે. રસયુકૃત વાક્યને કાવ્ય કહે છે, પછી તે પદ્ધતિંક્તિ હોય કે ગંધકથન હોય.

★ અલંકાર ભાષાને ચિત્તહર-મનહર, સરસ અને સચોટ બનાવે છે.

★ અલંકારના પ્રકાર : બે પ્રકાર : (1) શબ્દાલંકાર (2) અર્થાલંકાર

1 શબ્દાલંકાર : જે અલંકાર દ્વારા કેવળ શબ્દને જે ચમત્કૃતિભર્યા કે આકર્ષક બનાવવામાં આવે તેને શબ્દાલંકાર કહે છે. શબ્દાલંકારમાં શબ્દની ખૂબીની ચાવી તે તેના શબ્દો છે.

● દાટ. : 'ફુલી કરાનું કરુણાનંદ કરો' માં શબ્દની ખૂબી છે ને બદલે 'ચાવી બનાનું કરુણાનંદ' ની અર્થયુકૃત શબ્દ બદલવાથી શબ્દ ચમત્કૃતિ નાશ પામે છે.

2 અર્થાલંકાર : જે અલંકાર દ્વારા અર્થને ચમત્કૃતિભર્યા કે આકર્ષક બનાવવામાં આવે તેને અર્થાલંકાર કહે છે.

● દાટ. : ચાંદનીના ઢગલા જેઠું હરણનું બચ્ચું રૂપાની સાંકળે બાંધેલું હતું.

★ આ વાક્યમાં કાનને મખુર લાગે તેવો અસર કે શબ્દ નથી. પણ હરણના બચ્ચાને ચાંદનીના ઢગલા સાથે સરખાવવામાં આવ્યું છે. તેથી અર્થ સચોટ અને સુંદર બન્યો છે. હરણના બચ્ચાની સુંદરતાની સચોટ છાપ આપવા મન પર પડે છે. અર્થને સુંદર સચોટ બનાવનાર અલંકારને અર્થાલંકાર કહે છે.

ધ્યાનમાં રાખવાની બાબતો :

★ અલંકારનો અભ્યાસ કરતાં પહેલાં નીચેની બાબતોનો અભ્યાસ જરૂરી છે:

1. ઉપમેય : જેને માટે કોઈ સરખામણી કરવામાં આવી હોય તેને ઉપમેય કહે છે.
2. ઉપમાન : વસ્તુને (ઉપમેયને) જેની સાથે સરખાવવામાં આવે તેને ઉપમાન કહે છે.

A ઉપમાનવાચક કે વાચક : ઉપમેયની ઉપમાન સાથે સરખામણી કરતી વખતે સમ, સમાન, તુલ્ય, જેણું, શું, સમોવંદું જેવા શબ્દોનો પ્રયોગ કરવામાં આવે છે. આ સરખામણી સૂચવતા શબ્દોને ઉપમાનવાચક કે વાચક પદો કહે છે.

● દાટ. : દમયંતોનું મુખ ચંદ જેણું સુંદર છે. ઉપમેય ઉપમાન વાચક પદ સાખાલું ધર્મ

B સાધારણ ધર્મ : ઉપમેયને ઉપમાન સાથે કોઈએક સમાન ગુણની બાબતમાં સરખાવવામાં આવે છે કે એ ગુણને 'સાધારણ ધર્મ' કહે છે.

★ શબ્દાલંકારો : (1) અનુપ્રાસ (વર્ણાનુપ્રાસ/વર્ણસગાઈ) (2) યમક (શબ્દાનુપ્રાસ) (3) પ્રાસસાંકળી (અંતરપ્રાસ) (4) અંત્યાનુપ્રાસ.

★ અર્થાલંકારો : (1) ઉપમા (2) રૂપક (3) ઉત્પ્રેક્ષા (4) અનન્વય (5) વિત્તિરેક (6) શ્વેષ (7) વાજસુતિ (8) સજ્જવારોપણ

શબ્દાલંકારના પ્રકારોની વિગતવાર સમજ :

1. વર્ણાનુપ્રાસ કે વર્ણસગાઈ

★ વ્યાખ્યા : વાક્યમાં એકનો એક વર્ણ (અસર) શબ્દના આરંભે બે કે તેથી વધારે વખત આવે ત્યારે વર્ણસગાઈ કે વર્ણાનુપ્રાસ અલંકાર બને છે.

- દાટ. : 1. નાટ્ય નિરાયા ને ! તેં...
2. નિત્ય સેંચા, નિત્ય કીર્તિન-સૌંદર્ય, નિરામય નંદુમાર રે.
3. જગનો જગન જગનતા બને.
4. કારોઝાને કામ કાણ્ણું.
5. મૂર્ખ મનમાં મોટા રે, અજાણુંયે ઉતારણ આવે.

2. યમક (શબ્દાનુપ્રાસ)

★ વ્યાખ્યા : એકનો એક અસરસમૂહ બીજીવખત આવતો હોય અને બને ડેકાણો બેના જુદા-જુદા અર્થ થતા હોય ત્યારે યમક અલંકાર બને.

- દાટ. :
1. માયાની ધ્યાયામાંથી કાપાને મુક્ત કરવા ગોવિંદરાયાની માયા કરો. ('માયા' શબ્દના બે અર્થ)
2. અખાડામાં જવાના મેં વધુલીવાર અખાડા કર્યો છે.
3. દીવા નથી દરખારમાં, દીવા નથી છે અંધારું થાર.
('દીવા નથી', 'દીવા નથી' એ સરખા ઉચ્ચારવાળાં પદો છે તેમનો અર્થ બદલાઈ જાય છે.)
4. જોતાં વાંત જ હઈયું વિષમશર વિંધી લીધ વિષમ શરે.
(વિષમ શર - કામદેવ / વિષમ શરે - વિષણ બાંધોથી.)
5. વદન સુધાકરને રહું નિહાળી.

3. પ્રાસ-સાંકળી/અંતરપ્રાસ

★ પહેલા ચરણના છેલ્લા શબ્દ અને બીજા ચરણના પહેલા શબ્દ વચ્ચે પ્રાસ રચાય ત્યારે પ્રાસસાંકળી કે અંતરપ્રાસ અલંકાર બને છે.

- દાટ. : 1. વિદ્યા ભણિયો જેહ, તેહ ઘેર વેલ્બવ રૂપે.
2. જાણી લે જગદીશ, શીશ સદ્ગુરુને નામી.
3. મહેતાજી નિશાને આવ્યા, લાલ્યા મસાદને કર્યો જોયશ્વ.
4. ઘેર પણાર્યી હરિણજી ગાતા, વાતા તાલને શાખ મુંગ.

4. અંત્યાનુપ્રાસ

★ કોઈપણ કડીની પહેલી લીટીને છેડે જેવા અસરો આવે તેવા જ અસરો બીજી લીટીને છેડે આવે ત્યારે અંત્યાનુપ્રાસ અલંકાર બને છે. અથવા પંક્તિને અંતે સમાન ઉચ્ચારવાળા શબ્દો આવ્યા હોય.

- દાટ. : 1. જો જો રે મોટાના બોલ
ઉજ્જ બેડ બાજ્યો દોલ.
2. જામી ગઈ તરત ધાર, કરાલ રાત.
લાગી બધે મસરવા પુર માંદિ વાત.
3. દુર્યોધન પ્રેણિત દૂન એક, દેખાવમાં ઘાતક દુષ્ટ છેક.
4. જના જશોદા માવલડી. બનાવે ગોકુલી ગાવલડી.
5. અતારિયા ! અતરના સોદાન કીજુથે.
અતારિયા ! અતરનો એમનોમ દીજુથે.

અથવાંકારના પ્રકારોની વિગતવાર સમજ :

1. ઉપમા

★ બે જુહી-જુહી વસ્તુઓ વચ્ચે કોઈ એક ખાસ ગુણ અંગે સરખામણી કરવામાં આવે અથવા ઉપમેયની ઉપમાન સાથે સરખામણી કરવામાં આવે, તેને ઉપમા અલંકાર કહે છે.

★ નોંધ : જેવું, જેવી, જેવો, સમાન, સરખા, શો, જેમ, સમોવહું, પેટે, રીંશી, સદ્દશ, તુલ્ય, સમું... જેવા ઉપમાસૂચક શબ્દો દ્વારા સરખામણી થાય.

● દાટ. : 1. ડેણો સોટા જેમ હાલવાચાલવા લાગ્યો.

2. શામળ કહે બીજા બાપડા, પદ્ધાણ સરીખા પારાયા.
3. વજાર સમાજા કોટના ગઢને તપાસીએ.
4. શરૂઆતમાં એ લોકો પીળાયટા વાય જેવા લાગતા.
5. ધીમે ધીમે તે ઱ગ ધરતો - કોઈ મન ગજેન્દની માફક.
6. દમયંતીનું મુખ ચંદ જેવું છે.

2. રૂપક

★ ઉપમેય અને ઉપમાનને એકરૂપ બતાવવામાં આવ્યા હોય એટલે કે બતેની વચ્ચે સાધારણ ધર્મ જેવું હોતું નથી. ત્યારે રૂપક અલંકાર બને છે.

● દાટ. : 1. બપોર એ મેંહું શિકારી હૂતું છે.

2. દમયંતીનું મુખ તો ચંદ છે.
3. અને આ ચરણ તમારાં પારિજાતનાં કૂલ કૂલની પગલી પાડો.
4. એમની આંખોની લાગડીની ભીનાશ હતી.
5. આ સંસારસાંકર તરવો સહેલો નથી.
6. પંડની પટેમા પારસ છે પણ્યો.

3. ઉત્તેષ્ઠા

★ ઉપમેય જીણે ઉપમાન હોય તેવો તક - સંભાવના કરવામાં આવે ત્યારે ઉત્તેષ્ઠા અલંકાર બને છે.

★ સંભાવના સૂચક શબ્દો : જીણે, રખે, શકે, શું વગેરે.

● દાટ. : 1. દમયંતીનું મુખ જીણે પુનમનો ચંદ !

2. થાય છે મારી નજર જીણે હરણ, ને રહે છે કેક્તી એ ચાસમાં.
3. હુંયું જીણે હિમાલય.
4. કાયાના સરોવર જીણે હેલે ચન્દ્યા.
5. જ્યાં ત્યાં આવી વય બદલી સતાય, જીણે પરીઓ.

4. અનન્વય

★ (અન્ત + અન્વય) ઉપમેયની સરખામણી કરવા યોગ્ય ઉપમાન ન મળતાં ઉપમેયની સરખામણી ઉપમેય સાથે જ કરવામાં આવે ત્યારે અનન્વય અલંકાર બને છે.

● દાટ. : 1. માતે મા

2. દમયંતીનું મુખ તે દમયંતીનું મુખ
3. બોધીજ એટલે ગંભીજ
4. સાગર સાગર જેવો છે, આકાશ આકાશ જેવું છે
5. જોગનો ધોખ એટલે જોગનો ધોખ

5. વ્યતિરેક

★ ઉપમેયને ઉપમાન કરતાં ચઢિયાતું ગણવામાં આવે છે ત્યારે વ્યતિરેક અલંકાર બને છે.

● દાટ. : 1. સુધામાના વંખબ આગળ કુંભર તે કાંચ માત્ર.

2. ઇમણીના મુખ પણે ના ચંડ પણ નિસ્તેજ લાગે છે.
3. હલડા નો પારેવાની પાંખયો. માણદંબથીય મોટાજી.
4. ગંગાના નાર ના રથે રથે હેઠાં લોલ. સરખો એ પ્રેમના પ્રવાહ રે.

6. શ્રેષ્ઠ

★ એકજ શબ્દના બે અથવા વધારે અર્થ થાય ત્યારે શ્રેષ્ઠઅલંકારબને છે.

● દાટ. : 1. રવિને પંતાનો તાડકો ન ગમે તો કુંઝ જાય ? ('રવિ'ના બે અર્થ)

2. જવાની તો જવાની. (જવાનીન્યોવન, જતી રહેવાની)
3. પાનીમાં પાણી નથી પાણી કંપ કરાયે ? (પાણી-તાકાત, જળ)

7. વ્યાજસ્તુતિ

★ નિંદા દ્વારા વખાજ અને વખાજ દ્વારા નિંદાના રૂપમાં હોય ત્યારે વ્યાજસ્તુતિ અલંકાર બને છે.

● દાટ. :

1. શું તમારી બખાહુરી ! ઉદ્દર જોઈને નાઠા. (વખાજ દ્વારા નિંદા)
2. તમે ખરા પદ્ધલવાન ! ઊગતો આવણ કુંઝ ગયા.
3. સમાનનું છંલવી પાટલી પર બેસવાનો શોખ છે.
4. છગન માયકાંગલો નથી, પાપડનોડ પદ્ધલવાન છે.
5. જરૂર હોશયાર વિદ્યાર્થી બીજા નંબરના સ્થાનનો કંઈ વેરી છે. (નિંદા-વખાજ)

8. સઞ્ચારોપણ

★ નિર્જવમાં સઞ્ચારનું આરોપણ કરવામાં આવે છે. માનવસ્વભાવનું આરોપણ નિર્જવ પદ્ધારોમાં થાય ત્યારે સઞ્ચારોપણ અલંકાર બને છે.

● દાટ. :

1. રામે સીતાચ માટે વિલાય કરતા જોઈને પથરો પણ રડી ઊકચા.
2. હુલ હુસતાં હુસતાં.
3. દૂરના તુંગરો સાદ કરીને બોલતા હના.
4. રાતોરાત વનપટ પરાયું બદલો લેણે.
5. તગડીનાં પાદર વીધીને સુદુર ડેઝની હોય.

છંડ ઓળખાવો

છંડ અને તેના પ્રકારો

- ★ સંસ્કૃતમાં છંદોને વૃત્ત અને જાતિ એવા બે પ્રકારોમાં વહેંચવામાં આવે છે. ગુજરાતીમાં વૃત્તને અક્ષરમેળ છંડ અને જાતિ માત્રામેળ છંડ તરીકે ઓળખાય છે.
- ★ સાહિત્યનું આકર્ષક રસકેન્દ્ર તે કવિતા. કવિતામાં પંક્તિ ચોક્કસ માપની હોય છે. પદ્ધાની રચના ચોક્કસ માપ કે છંદમાં હોય છે. જેને પોતાનું નિશ્ચિત સ્વરૂપ હોય છે. છંદથી માધુર્ય પેદા થાય છે. ટૂંકમાં, “માધુર્ય સર્જવ માટે દરેક લીટીમાં અકારોની ચોક્કસ પ્રકારની ગોઠવણી એટલે છંડ.”

- ★ છંદનું બંધારક સમજવા માટે લધુ ગુરુ, ગણ, માત્રા, ધતિ વગેરે સમજવા જરૂરી છે.

- ★ છંદના મુખ્ય બે પ્રકાર છે : (1) અક્ષરમેળ છંડ (2) માત્રામેળ છંડ
- 1. અક્ષરમેળ છંડ :** અક્ષરમેળ છંદમાં કાવ્યની પંક્તિઓના અકારોની ગણતરી કરવી પડે છે. તેમાં લધુ-ગુરુ અકારોની ચોક્કસ સંખ્યા નક્કી કરી ગણરચના કરવામાં આવે છે.

- ★ લધુ અક્ષર : છંદના શાસ્ત્રમાં ઝૂસ્યને લધુ કહે છે, અ, ઈ, ઉ અને ઝ સ્વરોવાળા વર્ણ અને એ સ્વરો જે વંજનોને લાગ્યા હોય તે લધુ (ઝૂસ્ય) કહેવાય. દા.ત. ક, રિ, યુ, સુ, પ્ર વગેરે ‘લધુ’ની ~ નિશાની છે.

- ★ ગુરુ અક્ષર : છંદના શાસ્ત્રમાં હીર્ઘને ગુરુ કહે છે. આ, ઈ, ઉ, એ, એ, ઓ, ઔ સ્વરોવાળા વર્ણ અને એ સ્વરો જે વંજનોને લાગ્યા હોય તે વંજનોને ગુરુ કહેવાય. દા.ત. ઝ, વ, ની, ટ, લો, લૂ ‘ગુરુ’ની નિશાની - છે.

- ★ ધતિ : છંદની પંક્તિમાં ક્યારેક અટકીને કે લંબાવીને પાઈ કરવાના સ્થાન આવે છે. આવા સ્થાનને ધતિ કહેવામાં આવે છે.

- દા.ત. : ઊચા ઊચા / શિવ શિખરના / શોભતા શા પ્રદેશો.

- ★ ધતિભંગ : છંદના બંધારણમાં જ્યાં ધતિ આવતો હોય ત્યાં શબ્દ પૂરો થવો જોઈએ. કોઈકવાર કોઈક પંક્તિઓમાં ધતિને કારણે શબ્દને તોડીને ઉચ્ચારવો પડે છે. આમ થાય ત્યારે ધતિભંગ થયો છે એમ કહેવાય.

- દા.ત. : ને બીડિલા / કમલ મહી / બંધાઈ સૌન્દર્યલો. ઉપરોક્ત પંક્તિમાં ‘ને’ પાસે ધતિસ્થાન હોવાથી શબ્દને તોડીને ‘ને’ પાસે સહેજ અટકીને તેને ઉચ્ચારવો પડે છે.

- ★ તાલ : છંદમાં અમુક અમુક અંતરે ભાર મુકાય છે તેને તાલ કહે છે.

- ★ ચરણ : છંદની પૂરેપૂરા માપવાળી એક લીટીને ચરણ કે પાઈ કહે છે. ચરણ સામાન્ય રીતે એક અલગ પંક્તિરૂપે લખાય છે.

- દા.ત. : દીપકના બે દીકરા, કાળજને અજવાશ (પંક્તિ-1)

ચરણ-1 ચરણ-2

એક કપૂત કાણું કરે, બીજો દિયે પ્રકાશ. (પંક્તિ-2)

ચરણ-3 ચરણ-4

- ★ કડી કે શ્લોક : ચાર ચરણ કે પાછની એક કડી કે શ્લોક બને છે. આ નિયમ ન જગ્યાવાય તો શ્લોકભંગ થયો ગણાય છે.

- ★ શુદ્ધિભંગ : એક ગુરુ અક્ષરને સ્થાન બે લધુ અક્ષર આવે તેને શુદ્ધિભંગ કહે છે.

લધુ અક્ષરો ક્યારે ગુરુ બને ?

1. અનુસ્વાર અથવા અનુનાસિક

- ★ કોઈપણ અક્ષર ઉપર અનુસ્વાર તીવ્ર હોય ત્યારે તે અક્ષર ગુરુ ગણાય. ● દા.ત. : પંકજ, ગંગા, દંડ, સંમતિ વગેરેમાં પ, ં, ઙ, ં, સં ગુરુ અક્ષરો છે.
- કેટલીકવાર અનુસ્વારનો ઉચ્ચાર મુદ્દુ હોય ત્યારે અનુસ્વાર યુક્ત અક્ષર લધુ ગણાય.
- દા.ત. : કહું, જઉં, મળું, બોલતું, સુંવાણું, કુવાણું વગેરેમાં આવેલ અનુસ્વાર હળવો હોવાથી એ લધુ અક્ષરો છે.

2. સંયુક્ત અક્ષર

- ★ બે વંજનો જોડાઈને સંયુક્ત વંજન બને છે. સંયુક્ત વંજનમાં સ્વર મળતાં સંયુક્ત અક્ષર થાય છે.

- દા.ત. : ક + અ = કા
- લધુ અક્ષર પછી સંયુક્ત અક્ષર આવે તો લધુ અક્ષર ગુરુ ગણાય તેથી તેની બે માત્રા હોય છે.
- દા.ત. : ‘નિઝળ’ માં પહેલો અક્ષર ‘નિ’ લધુ છે. પછી તેની પછી આવેલા સંયુક્ત અક્ષરના થડકાને લીધે તે ગુરુ છે. દુષ્ટ, શિષ્ટ, દાઢિ - ગુરુ અક્ષર.
- જ્યારે સંયુક્ત અક્ષરોનો ઉચ્ચાર મુદ્દુ હોય ત્યારે પૂર્વે આવેલો લધુ અક્ષર લધુ અને એક માત્રાવાળો જ રહે છે.
- દા.ત. : ગણું, ઠણું, પણ્યો, મળ્યા - લધુ અક્ષરો અને.
- ★ વિસર્ગ : વિસર્ગવાળો અક્ષર લધુ હોય, પછી વિસર્ગનો ઉચ્ચાર કરવો પડે તો તે ગુરુ થાય. દા.ત. અંત:કરણમાં ‘ત’ ગુરુ ગણાય.
- ★ ગણરચના : લધુ-ગુરુ અક્ષરના બનેલા જૂથને ગણ કહે છે. આવા આઈ ગણ છે. આ યાદ રાખવા નીચેની પંક્તિ તૈયાર કરવામાં આવે છે.

સૂત્ર : ચ મા તા રા જ ભા ન સ લ ગ ા

ક્રમ	ગણ	લધુગુરુ બંધારણ	ઉદાહરણ	ચિહ્ન	અક્ષર (લધુ-ગુરુ)
1.	ય-ગણ	યમાતા	જશોદા	---	લધુ-ગુરુ-ગુરુ
2.	મ-ગણ	માતારા	આકાશા	---	ગુરુ-ગુરુ-ગુરુ
3.	ત-ગણ	તારાજ	આકાશ	---	ગુરુ-ગુરુ-લધુ
4.	ર-ગણ	રાજભા	માનવી	---	ગુરુ-લધુ-ગુરુ
5.	જ-ગણ	જીભાન	સંદેવ	---	લધુ-ગુરુ-લધુ
6.	ભ-ગણ	ભાનસ	વૈભવ	---	ગુરુ-લધુ-લધુ
7.	ન-ગણ	નસલ	મિનિટ	---	લધુ-લધુ-લધુ
8.	સ-ગણ	સલગા	વલભો	---	લધુ-લધુ-ગુરુ
9.	લ	લધુ	-	~	લધુ
10.	ગા	ગુરુ	-	--	ગુરુ

- 2. માત્રામેળ છંડ : માત્રામેળ છંદમાં અકારો નહિ, પછી માત્રા જ જોવાય. લધુ ~ ની જોડ (1) અને ગુરુ ની બે (2) માત્રા ગણાય છે.

છંદના પ્રકાર

- ★ અક્ષરમેળ છંડ : 1. શિખરિણી 2. પૃથ્વી 3. મંદાકાણા

- 4. શાર્દૂલ વિકીંજિત 5. મનહર 6. અનુષ્ઠુપ 7. અણખરા

- ★ માત્રામેળ છંડ : 1. દીહરો 2. ચોપાઈ 3. સવેચા 4. હરિગીત

વિભક્તિ ઓળખાવો

અનુગો અને નામયોગીઓ

- ★ વિભક્તિઓ એટલે શું ?
- વાક્યના પદો વચ્ચે કર્તા, કર્મ વગેરે જુદા-જુદા પ્રકારના જે સંબંધો હોય છે તેને વિભક્તિ સંબંધ કે વિભક્તિઓ કહેવામાં આવે છે.
- ‘એ’, ‘ને’, ‘થી’, ‘માં’ વગેરેને વિભક્તિ પ્રત્યયો કે અનુગો કહે છે.
- દા.ત. : નચિકેતે નીતાને કખવાના સમજાવી.
(રેખાંકિત વર્ણ ‘એ’, ‘ને’ પ્રત્યય દર્શાવે છે.)
- ★ વિભક્તિને લાગતા અનુગો :
- ‘એ’, ને ‘થી’, થકી, માં, નો, ની, નું, ના, નાં
યાદ રાખો : કર્તો પ્રત્યય કે અનુગ ન હોય એ સ્થિતિ પણ કોઈક વિભક્તિ દર્શાવવાનું કામ કરે છે.
- દા.ત. : નીતા ગીત ગાય છે.
કર્તા વિ. કર્મ વિ.
- ★ અનુગો અને નામયોગીઓ : અનુગો જેમ વિભક્તિ દર્શાવવાનું કામ કરે છે તેમ નામયોગીઓ પણ વિભક્તિઓ દર્શાવે છે.

યાદ રાખો :

1. અનુગો અને નામયોગી બંસે પદની પાછળ આવે છે અને વિભક્તિ દર્શાવે છે.
2. અનુગો પદ સાથે જોડાઈને આવે છે. નામયોગી અલગ મૂકાય છે.
3. નામયોગીઓ ઘણીવાર પોતાની પહેલાં નો, ની, નું, ના કે નાં વગેરેમાંથી કોઈ અનુગ લે છે.
4. અનુગોની સંઘા ચોક્કસ છે, ‘એ’, ‘ને’, ‘થી’, નો, ની, નું, નાં, ના, માં..... વગેરે
5. નામયોગીઓ અનેક છે. જેમ કે વડે, વતી, થકી, મારફત, દારા, સાથે, સિવાય, વિના, લીધે, કારણે, તરીકે, પેઠે, માફક, માટે, કાજે, વાસ્તે, સાડુ, ખાતર, તથું, કેનું, પાસે, તરક, સામે, અંદર, બાહીર, ઉપર, નીચે, આગળ, સુધી, અંગે
6. વિભક્તિના અનુગો કે નામયોગીઓ મુખ્યત્વે સંજ્ઞા અને સર્વનામને લાગે છે.

- ★ વિભક્તિ એટલે સંજ્ઞા કે સર્વનામના પદોનો કિયાપદ સાથેનો કે અન્ય સંજ્ઞા, સર્વનામ સાથેનો સંબંધ.

ગુજરાતી ભાષામાં આવતી વિભક્તિઓ

અને તેમને લાગતા અનુગો કે નામયોગી દર્શાવતો કોઠો :

વિભક્તિ	અનુગો (પ્રત્યય)	નામયોગીઓ
1. કર્તા વિભક્તિ	x, ને, એ, થી	-
2. કર્મ વિભક્તિ	x, ને	-
3. કરણ વિભક્તિ	એ, થી	વડે, દારા, મારફત
4. સંપ્રદાન	ને	માટે, કાજે, વાસ્તે, સાડુ
5. અપાદાન	થી	થકી
6. સંબંધ	નું (નો, ની, નું, ના)	તથું, કેનું
7. અધિકરણ	એ, માં	પર, ઉપર, તરક, સામે, સુધી
8. સંબોધન	x	-

(x નિશાન વિભક્તિ પ્રત્યય ન પણ લાગે એવો અર્થ દર્શાવે છે.)

ગુજરાતી ભાષાની વિભક્તિઓનો પરિચય :

1. પ્રથમા વિભક્તિ (કર્તા વિભક્તિ)

- ★ કિયાનો કરનાર તે કર્તા. દરેક કિયાનો કર્તા હોય છે. કોઈપણ પદ જ્યારે કિયાના કરનારને દર્શાવે ત્યારે તે કર્તા વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય. સામાન્ય રીતે આ વિભક્તિનો પ્રત્યય લખાતો નથી. કયારેક એને ‘એ’ પ્રત્યય લગાડવામાં આવે છે.
- દા.ત. : ગીતા સરસ ગીત ગાય છે. (અનુગ વગરનો કાઠ)
ગીતાને સરસ ગીત ગાયું. (અનુગવાળો કાઠ)
- ★ કર્તા વિભક્તિ ગુજરાતીમાં અનુગ વિના તેમજ ‘એ’, ‘ને’ અને ‘થી’ અનુગથી દર્શાવી શકાય છે.
- દા.ત. : 1. મીના કપડા ધોવા બેઠી છે. (અનુગ વિના કાઠ)
2. પૂર્વાદિત્યને રમવું ગમે છે. (‘ને’ અનુગ સાથે કાઠ)
3. મધુથી અવાશે નહિં. (‘થી’ અનુગ સાથે કાઠ)
4. ગિલાંશેછકડાનું હેન્દલ પકડવું. (‘એ’ અનુગ સાથે કાઠ)

2. દ્વિતીય વિભક્તિ (કર્મ વિભક્તિ)

- ★ કર્તા દ્વારા જે કિયા થાય, જે પ્રવૃત્તિનો આધાર હોય અથવા તો કર્તા પોતાની કિયા વડે જે ફળ પ્રાપ્ત કરવા હુંચે તે કર્મ. સામાન્ય રીતે કિયાનો વિષય કે લક્ષ્ય હોય તે બનાવનાર પદને કર્મ કહેવાય.
- દા.ત. : 1. પ્રદિપ પ્રદર્શનમાં ચિંગો જુબે છે.
(ચિંગો જોવાની કિયાનો વિષય)
2. શિકારીના પગરવે સિંહધૂન ચમકાવી.
(સિંહધૂન ચમકાવાની કિયાનો વિષય)
- 3. કિના મને મંદિરે મળી. (મળવાની કિયાનો વિષય)
- ★ ઉપરોક્ત વાક્યોમાં ‘ચિંગો’, ‘સિંહધૂન’, ‘મને’ એ પદો કર્મ વિભક્તિના છે.
- ★ કેટલીકવાર એકજ વાક્યમાં બે કર્મ પણ હોય ત્યારે તેવી રૂચનાને દ્વિકર્મ કહેવાય. એમાં એક મુખ્ય કર્મ અને બીજું ગૌપ્ત્ર કર્મ ગણાય છે. કેટલાક કિયાપદો બે કર્મ લેતા હોય છે.
- દા.ત. : દાદાજ બાળકોને વાર્તા કહે છે.
ગૌપ્ત્રકર્મ મુખ્યકર્મ
- ★ આમ, કર્મવિભક્તિને પ્રત્યય હોતો નથી. અને જો કયારેક પ્રત્યય હોય તો તેમાં ‘ને’ પ્રત્યય પ્રયોજાય છે.

3. તૃતીય વિભક્તિ (કરણ વિભક્તિ)

- ★ કરણ એટલે સાધન. કિયા કરવામાં જેનો ઉપયોગ થાય તે, કિયા કરવામાં જે ઉપયોગી હોય તે. જ્યારે કિયાનું સાધન રીતે કારણ દર્શાવે છે, ત્યારે તે કરણ વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય.
- દા.ત. : 1. ભારે દેખે એ દ્વારાનામો ગયા. (‘એ’, રીતનો અથ)
2. તેણે કલમથી કાગળ લખ્યો. (‘થી’ સાધનનો અથ)
3. તે ચાક વડે લીટા કરતી. (‘વડે’ સાધનનો અથ)
- 4. મે મારા મિત્ર દ્વારા સંદેશો મોકલાયો હતો. (‘દ્વારા’ રીતનો રીત)
- ★ યાદ રાખો : (કરણ વિભક્તિમાં વપરાતા નામયોગીઓ જેવા કે મારફત, દારા, માફક, પેઠે, જેમ, સાથે વગેરે રીતનો અર્થ દર્શાવે છે.)

4. ચતુર્થી વિભક્તિ(સંપ્રદાન વિભક્તિ)

- ★ કિયાનું ફળ જેને પ્રામ થાય તે સંપ્રદાન. કર્તા કિયા દ્વારા કશુંક આપીને કશુંક પ્રામ કરવા હુંછે છે ત્યારે સંપ્રદાન વિભક્તિ પ્રયોજય છે.
- દા.ત. : 1. વડીલોને ભગવાને ઘણું દાન આપ્યું છે.
2. તે ઉપાધ્યાયને ગાય આપે છે.

ઉપરના વાક્યોમાં ‘વડીલાન’ અને ‘ઉપાધ્યાયને’ પદો સંપ્રદાનમાં છે, ‘આપવુંના અર્થમાં કિયાપદો સંપ્રદાન - વિભક્તિ દર્શાવે છે.

- ★ સંપ્રદાન વિભક્તિમાં ‘ને’, ‘માટે’, ‘વાસ્તે’, ‘સાંદું’, ‘કાજે’, ‘જો માટે’ વગેરે પ્રત્યા કે નામયોગી લાગે છે.

5. પંચમી વિભક્તિ (અપાદાન વિભક્તિ)

- ★ અપાદાન એટલે છૂટા પડવું. વાક્યમાં જ્યારે છૂટા પડવાનો ભાવ (અર્થ) પ્રગટ કરવો હોય ત્યારે અપાદાન વિભક્તિ પ્રયોજય. અપાદાન વિભક્તિમાં છૂટા પડવાનો ભાવ છે. જેનાથી છૂટા પડવાની કિયા થઈ હોય તેને દર્શાવતું પદ અપાદાન વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય.
- દા.ત. : 1. મેં સુરપુરાથી વુંદાવન જવાનું નક્કી કર્યું.
(છૂટા પડવાનો અર્થ)
2. ઊંડા અંધારેથી પ્રભુ ! પરમ તેજે તું લઈ જા.
(છૂટા પડવાનો અર્થ/હૂર થવાનો અર્થ)
3. નિમીખાએ પતિના હાથમાંથી થેલી લઈ લીધી.
(છૂટા પડવાનો અર્થ)
4. જાડ પરથી ફળ પણ્યું.
(છૂટા પડવાનો અર્થ)

- ★ થાંડ રાખો : તુલના કે તશ્શાવત દર્શાવતાં પદોમાં અપાદાનનો અર્થ સૂક્ષ્મ હોય છે. આમ અપાદાન વિભક્તિના પ્રત્યા થી, ‘થડી’, ‘થકી’, ‘માંથી’, ‘ઉપરથી’, ‘પાસેથી’, ‘ને લાધે’ વગેરે છે.

6. પણી વિભક્તિ (સંબંધ વિભક્તિ)

- ★ એક નામને અન્ય નામ સાથે જોડનાર તે સંબંધ. વાક્યમાં સંજ્ઞા કે સર્વનામના પદને કિયાપદાન બદલે બીજા સંજ્ઞા કે સર્વનામના પદ સાથે જોડવાની જરૂર પડે છે. જે નામપદ આ રીતે બીજા નામપદ સાથેનો સંબંધ પ્રગટ કરે તે સંબંધ વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય.

- દા.ત. : 1. પતિની પત્ની
2. વૃદ્ધનું ફળ
3. માબાપનો એકનો એક દીકરો
4. લાખાવાળાનો આત્મારામ, એ વછેરા!

ઉપરના વાક્યોમાં નો, ની, નું, વગેરે એક પદને બીજા પદ સાથે કોઈ ચોક્કસ સંબંધથી જોડે છે માટે તે સંબંધ વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય.

- દા.ત. : ગણિતના દાખલા ગણો.

- ★ ઉપરોક્ત વાક્યમાં ‘ગણિતના’ એ પદ ‘દાખલા’નો વિશેષ પરિચય આપે છે. અહીં ગણિતના એ નામપદનો ‘દાખલા’ નામપદ સાથે સંબંધ છે. એ સંબંધ ‘ના’ પ્રત્યયથી રચાય છે.
- ★ આમ, સંબંધ વિભક્તિના પ્રત્યા નો, ની, નું, નાં, તણુ કેરું, દારા વગેરે છે.

7. સભમી વિભક્તિ (અધિકરણ વિભક્તિ)

- ★ કિયાનું સ્થાન કે કિયાનો સમય બ્યાતાવનાર પદો અધિકરણ વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય. કિયાનો જે આધાર હોય તે અધિકરણ.
- દા.ત. : 1. હું બિલારીજીના દર્શન કરીને આશ્રમે આવ્યો - ‘અ’
2. કેટલાક સાથકો ઘરમાં રહીને સાથના કરે છે. - ‘માં’
3. અગિયારસના દિવસે ભગત પગે ચાલતા દામાંકુંમાંના નાહવા પડે - ‘અ’
- ★ ગુજરાતી ભાષામાં અંદર, બહાર, ઉપર, નીચે, પાસે, પઢખે, તરફ, સામે, પહેલાં, પડખે, પછી, બાદ, આગળ, પાછળ, સુધી, લગ્ન વગેરે જેવા નામયોગીઓ પણ કિયાના સ્થાન કે સમય દર્શાવવા પ્રયોજય છે.
- દા.ત. : 1. દાદા તેસરીસિંધના સુખ ઉપર નાખુશીના ભાવ છે.
2. હું સાત દિવસ સુધી રજા ઉપર છું.

8. અષ્ટમી વિભક્તિ (સંબોધન વિભક્તિ)

- ★ સંબોધન વિભક્તિ એક અર્થમાં કર્તા વિભક્તિ જ છે. સીધું સંબોધન હોય ત્યારે એ પ્રયોજય છે. વાક્યમાં કોઈને સંબોધન કરવામાં આવ્યું હોય તો એ પદ સંબોધન વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય. સંબોધન વિભક્તિનું પદ વાક્યથી સ્વતંત્ર કહે છે અને એને અલ્યવિરામ કે ઉદ્ગાર ચિહ્નથી જુદું પાડવામાં આવે છે.
- દા.ત. : 1. ભાઈ, તમે તેને મદદ કરશો કે?
2. ત્રણો લોકે, દેવા ! નથી તુજ સભાં અન્ય ન થશે.
3. બહેન, મારે તમારી કન્મા મારુગવાની છે.
- ★ ઉપરોક્ત વાક્યોમાં ભાઈ, દેવા, બહેન વગેરે પદ સંબોધનરૂપે પ્રયોજયાં છે. આ પદો વાક્યના અન્ય કોઈ પદ સાથે કર્તા, કર્મ કે આવા કોઈ સંબંધથી સંકળાતાં નથી પણ વાક્ય કોને ઉદ્દીને કહેવામાં આવ્યું છે તે દર્શાવે છે. તેથી આ પદો સંબોધન વિભક્તિમાં છે એમ કહેવાય. સંબોધન વિભક્તિમાં ‘હે’, ઓ, વગેરે જેવા પ્રત્યયરૂપ રૂપો પ્રયોજય છે. એમાં કોઈ અનુગ કે નામયોગીનો ઉપયોગ થતો નથી.

નિપાત અને તેના પ્રકારો

★ નિપાત એટલે શું? : વાક્યમાં આવતા જુદા-જુદા પ્રકારના પદો જેવકે સંશોધન, સર્વનામ, વિશેષજ્ઞ, કુંઠા, કિયાપદ, કિયાવિશેષજ્ઞ સાથે આવી શકે અને ભાર, નિશ્ચય વગેરે અર્થની વિશેષતા દર્શાવે તે પદોને નિપાત કહેવામાં આવે છે.

● એ.ટ.:

1. નિખિલે જુ આ કામ કર્યું. [સંશોધન સાથે]
2. નિખિલે કર્યું "હું જુ આ કરીશ." [સર્વનામ સાથે]
3. નિખિલ જલ્દી જુ ચાલે છે. [કિયાવિશેષજ્ઞ સાથે]
4. નિખિલની લિલો જુ રંગ ગમે છે. [વિશેષજ્ઞ સાથે]
5. નિખિલ હંમેશા લસતો લસતો જુ બોલે છે. [કુંઠા સાથે]
6. નો પાડવા છતાં નિખિલે એ કામ કર્યું જુ. [કિયાપદ સાથે]

★ ગુજરાતી ભાષામાં આવતા નિપાતો :

નિપાત	ક્યો અર્થ વ્યક્ત કરે છે?
1. જ	ચોક્કસપણું, નિશ્ચય
2. તો	બીજું કોઈ જીય કે ન જીય, પણ હું જઈશ એવો અર્થ
3. ને	આગ્રહ કે ખાતરી
4. ય / યે	બીજી સાથે આનો પણ સમાવેશ
5. પણ	બીજી સાથે આનો પણ સમાવેશ
6. સુધ્યાં	બીજી સાથે આનો પણ સમાવેશ
7. ફક્ત, કેવળ, સુધ્યાં, માત્ર	આ જ અને બીજું કંઈ નહિ એવો અર્થ
8. જ (ઓડાઓડ)	આદર, માન
9. અનુ, અદ્દ, અરી, અરાં	ખાતરી કરવાનો અર્થ

નિપાતના પ્રકારો

1. ભારવાચક નિપાત

★ ભારવાચી અર્થ બનાવે તે ભારવાચક નિપાત.

જ, તો, ય, પણ, સુધ્યાં, સિખ્ખે વગેરે આ પ્રકારના ભારવાચક નિપાત કહેવાય.

- એ.ટ.: 1. સુભિત્રા જુ આ લાભી શકશે.
- 2. જકાતનાકે છકડે તો મારી જ રહે.
- 3. ભક્ત થયા પ્રાજ્ઞ મિઠ ન જાણ્યો કરે તરવાનાં ઉપાય.
- 4. સુભિત્રાય જીત ગાશે.
- 5. ભાણલા સુધ્યાં આવી ભૂલ કરે છે.

2. સીમાવાચક નિપાત

★ જેમાં સીમા-મર્યાદા અંકાતી લાગે, સીમા મર્યાદાનો અર્થ અલિમ્બિક્ત કરતો હોય તે સીમાવાચક નિપાત કહેવાય.

ફક્ત, કેવળ, તહુન, સાવ, છેક, માત્ર વગેરે સીમા મર્યાદાનો સંદર્ભ ધરાવે છે. તેથી તે સીમાવાચક નિપાત કહેવાય.

- એ.ટ.: 1. ફક્ત દસ મિનિટમાં આવી જાઓ.
- 2. કેવળ તમારા માન ખાતર હું આવીશ.

3. તદ્દન નજીવી ભાનુતમાં અને જયદી પડ્યા.

4. તે આવ નેણું પડી જાનેણું.

5. છેક આવું યદે એવી મારી પરદાના નાંદળા.

3. વિનયવાચક નિપાત

★ જેમાં વિનય, વિવેક, માન-મોભો કે આદરનો અર્થ દર્શાવતો હોય તેવા નિપાત તે વિનયવાચક.

● આદરભાવ કે વિનય-વિનમતા માટે 'જ' લગાડાય છે તે વિનયવાચક નિપાત કહેવાય.

- એ.ટ.: 1. રૂબરૂ માણસતુલ્ય માની પણ નશોજુ.
- 2. વનમાં કલાલજુ કને, હુંય વસુ હું નના.
- 3. ભૂલચ્યુક મારુ કરશોજુ.
- 4. ગુરુજુને માણામ.

4. પ્રતીર્થ - લટકણિયાં રૂપ પ્રયોજિતા નિપાત

★ 'ને', 'કે', 'તો' 'તે', 'એમ કે' વગેરે જેવા ઘટકો જે વાતચીત દરમિયાન પ્રયોજિયાં હોય તેવા ઘટકો જ્યારે વાક્યના અંતે વિનયની, આગ્રહઅન્યવા તો અનુમતિ વગેરે જેવા અર્થમાં અને ક્યારેક તો એમ જાલટકણિયાં રૂપે પ્રયોજિયાં ત્યારે તેમને વાક્યનાં લટકણિયાંરૂપ પ્રયોજિતા નિપાત તરીકે ઓળખાવી શકાય.

- એ.ટ.: 1. રણે તો મારી વાત માનશે ને?
- 2. મને તમારા પેન આપશો કુ?
- 3. મને એમનું સરનામું જાણાન તો.
- 4. મને એમ કે તમે નહિ ચાલો રાકો.

કુદંત

- ★ કુદંત (કુદંત) એટલે શું ? : કુદંત એક વ્યાકરણની ભાષાનો શબ્દ છે. કુદંત કિયાપદ સાથે જોડાયેલી બાબત છે.
- ★ કેટલાક પદો કિયાપદની ચેમ કર્ના કર્મ લે છે, અને સાથે સાથે સંશા, વિશેપદ્ધ કે કિયાવિશેપદ્ધ તરીકે પદ્ધ આવી શકે છે. આવા પદો કુદંતો કહેવાય.
- ★ કિયાપદ તરીકે વપરાય અથવા ના પદ્ધ વપરાય.
- ★ કુદંતનો ઉપયોગ કિયાપદ સિવાય એટલે કે વિશેપદ્ધ, કિયાવિશેપદ્ધ તરીકે વાપરી શક્યા.
- દા.ત. : વાંચનું, વાંચેલું, વાંચનાર, વાંચવું, વાંચ્યાને...
વશેરે જુદા-જુદા કુદંતો છે.
- દા.ત. : 1. નાચ નાનપદ્ધતિમાં ખૂલ્લ નાચની. (કિયાપદ)
2. રઘુનાનુ રૂપાંનુ અવાંચે રૂપનુ. (વિશેપદ)
3. લખવું-વાંચવું ને કોઈ કેળવાની નથી.
ફરજ તના જાણનું. (સંશા)
- 4. મનિયાને હસનાં-હસનાં રૂપનુ. (કિયાવિશેપદ)

યાદ રાખો :

1. કુદંત એ કિયા રૂપો કે કિયાદર્શક પદો છે, એટલે કે એ વાક્યમાં કર્તા, કર્મ, વિશેપદ્ધ કે કિયાવિશેપદ્ધ તરીકે આવી શકે છે.
2. કુદંત કિયાપદ રૂપે પદ્ધ પ્રયોજાઈ રહે.
3. કુદંત સંશા, વિશેપદ્ધ, કિયાવિશેપદ્ધ તરીકે પ્રયોજાય છે.
(કુદંત જ્યારે કર્તા, કર્મ કે અન્ય વિભક્તિમાં આવે ત્યારે એ સંશા તરીકે વપરાયેલું છે અને કહેવાય.)
4. કુદંત ખૂલ્લ-ખાતુનું હોય કે પ્રેરક ખાતુનું હોય.
જેમકે : રૂપનું (મૂળ સાદું રૂપ) રૂપનાનું (પ્રેરકરૂપ) છે.
5. કુદંત કર્તારિ રચનામાં હોય કે કર્મલિંગ રચનામાં હોય. પ્રેરક ખાતુની પદ્ધ કર્મલિંગ કે ભાવે રચના હોય.
જેમકે : લખનું (કર્તારિ), લખાતું (કર્મલિંગ), લખાવતું (પ્રેરક કર્તારિ)
લખાવાતું (પ્રેરક કર્મલિંગ)

કુદંતના પ્રકાર

- ★ વાક્યરચનામાં કુદંત જે પ્રકારની કામગીરી બજાવે છે તેને આધારે તેના પ્રકાર નીચે મુજબ પાડવામાં આવે છે.
- ★ સામાન્ય રીતે કુદંતના પાંચ પદોનાર છે :
 1. વર્તમાનકુદંત
 2. ભૂતકુદંત
 3. ભવિષ્યકુદંત
 4. વિર્થ્ય કુદંત અથવા સામાન્ય કુદંત
 5. સંબંધક ભૂતકુદંત
 6. હેત્વર્થ કુદંત.
- ★ નોંધ : ઉપરોક્ત પાંચ પ્રકારોમાં એક સંબંધક ભૂતકુદંત સિવાયના સર્વ કુદંતો કિયાપદ તરીકે આવે છે.

1. વર્તમાનકુદંત

- ★ વર્તમાન કુદંતનો પ્રત્યય 'ન' છે અને તે લિંગચિહ્ન સાથે પ્રયોજાય છે.
વર્તમાનકુદંત સામાન્ય રીતે કિયાની કોઈપદ્ધ કાળની ચાલુ અવસ્થા દર્શાવે છે.
- દા.ત. : વાંચનો, વાંચની, વાંચનું, વાંચનાર
- ★ વર્તમાનકુદંતનો ઉપયોગ કિયાપદ, વિશેપદ્ધ, કિયાવિશેપદ્ધ અને

ક્યારેક સંશા તરીકે પદ્ધ થાય છે.

- દા.ત. : 1. પ્રદિપ નિયમિત કસરત કરતો. (કિયાપદ તરીકે)
2. તેઝાં રાતે તો જમતાં નથી. (કિયાપદ તરીકે)
3. ગમતું ગીત સાંભળવા હું બેસી રહ્યો. (વિશેપદ્ધ)
4. ચિત્રા સૂતાં સૂતાં જ વાંચે છે. (કિયાવિશેપદ્ધ)
5. પડતાંને કોણ પાઠું મારે ? (સંશા તરીકે)
- ધ્યાન રાખો : વર્તમાનકુદંત તરીકે વપરાયેલા પદોમાં છેલ્લોવર્ષા 'ન' એ વર્તમાનકુદંતનો પ્રત્યય દર્શાવે છે.

2. ભૂતકુદંત

- ★ કિયાની કોઈપદ્ધ કાળની પૂર્ણ અવસ્થા દર્શાવે તે ભૂતકુદંત, ભૂતકુદંતના બે પ્રકાર જોવા મળે છે.
 1. સાદું ભૂતકુદંત : 'ય' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નનવાળું
 2. પરોક્ષ ભૂતકુદંત : 'ય' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નનવાળું / વગરનું

- ★ સાદા ભૂતકુદંત અને પરોક્ષ ભૂતકુદંતનો પ્રયોગ વિશેપદ્ધ, કિયાવિશેપદ્ધ, સંશા તરીકે થાય છે.

3. સાદા ભૂતકુદંતના ઉદાહરણો :

1. કોઈ કશું બોલ્યું નહીં. (કિયાપદ)
2. રંધ્યાં ધાન રજાળી પડ્યા. (વિશેપદ્ધ)
3. તે માર્યો માર્યો કરે છે. (કિયાવિશેપદ્ધ)
4. હાથના કર્યા હૈયે વાગ્યા. (સંશા)

4. પરોક્ષ ભૂતકુદંતના ઉદાહરણો :

1. હરગોવિંદ અને હું બાળપદ્ધતિથી સાથે રમેલા. (કિયાપદ)
2. બોલ્યાં વેણ તીર સમાં. (વિશેપદ્ધ)
3. એકાદ-બે રડ્યાં-ખડ્યાં રહ્યા છે. (કિયાવિશેપદ્ધ)
4. સૂરેલાને જગાડવો નહીં. (સંશા)

3. ભવિષ્યકુદંત

- ★ કિયાની અપેક્ષિત અવસ્થા (થનાર સ્થિતિ) દર્શાવનાર કુદંત તે ભવિષ્યકુદંત. ભવિષ્યકુદંતનો પ્રત્યય 'નાર' છે.
એટલે કે 'નાર' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નનવાળું કે લિંગચિહ્ન વગરનું

- દા.ત. : કલિબદેન તો કાલે આવનાર હતા.
- ★ ભવિષ્યકુદંતનો પ્રયોગ કિયાપદ, સંશા અને વિશેપદ્ધ તરીકે થાય છે.
- દા.ત. : 1. સભામાં કેટલા વક્તાના લોલનાર હયો ? (કિયાપદ)
- 2. બોલનારા કોઈ કશું જ નાલિને ! (સંશા)
- 3. રંધનારો માસન માર્યો આવ્યો. (વિશેપદ્ધ)

4. વિર્થ્ય અથવા સામાન્યકુદંત

- ★ સામાન્ય રીતે કિયાની વિધિ - એટલે કે કર્તવ્ય કે કર્યાનો અર્થ બતાવે અથવા માત્ર કિયા થવાનો અર્થ દર્શાવતું કુદંત તે વિર્થ્ય અથવા સામાન્યકુદંત તરીકે ઓળખાય છે.

★ વિધર્થના બે પ્રકાર છે :

1. 'વ' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નવાળું કૃદંત

જેમ કે, કરવો, કરવી, કરવું ઘગેરે

2. 'વ' + 'ન' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નવાળું કૃદંત

જેમ કે, વાંચવાનો, વાંચવાની, વાંચવાનું, વાંચવાનાં

★ વિધર્થ કૃદંત કિયાપદ, સંજ્ઞા અને વિશેષણ તરીકે પ્રયોગાય છે.

● દા.ત. : 1. મારે તમને એક વાત કહેવી છે. (કિયાપદ)

2. જમવા માટે વણાં માણસો આવીને જોફો હતાં. (સંજ્ઞા)

3. કરવાનાં કામોની યાદી મેં કરી લીધી છે. (વિશેષણ)

★ વિધર્થનો પ્રથમ પ્રકાર 'વ' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નવાળું કૃદંત જેમાં કર્તવ્યનો ભાવ અભિવ્યક્ત થાય છે. જેમકે,

● દા.ત. : 1. શિક્ષકે કહ્યું છે કે તારે નિયમિત વાંચવું.

2. શાકુન્તલને હું કંઈ કહેવાનો નથી.

★ વિધર્થનો દ્વિતીય પ્રકાર 'વ' + 'ન' પ્રત્યય + લિંગચિહ્નવાળું કૃદંત વિધિ કે ફરજનો અર્થ દર્શાવે છે. જેમકે,

● દા.ત. : તમારે વખતસર દવા પીવાની છે.

● 'ન' અનુગવાળું વિધર્થ જ્યારે કર્મને અનુસરતું હોય ત્યારે ફરજનો અર્થ બંતાવે, જ્યારે એ કર્તાને અનુસરતું હોય ત્યારે ઈચ્છા કે ઈરાદાનો અર્થ દર્શાવે છે.

5. સંબંધક ભૂતકૃદંત

★ સંબંધ ધરાવતી આગળની કિયા દર્શાવે છે. સંબંધક ભૂતકૃદંતનો પ્રત્યય 'ઈ' કે 'ઈને' છે. એ કિયાવિશેષણ તરીકે કામગીરી કરે છે.

● દા.ત. : 1. રશ્મિ જમીને સૂઈ ગઈ છે.

2. મિત્રા સ્કૂલમાં ચાલીને ગઈ.

3. તેણે જાણી-જોઈને મને ખાડામાં નાખ્યો.

4. તે અમની નજીક આવીને તોભો રહ્યો.

★ ઉપરોક્ત ઉદાહરણોમાં જમીને, ચાલીને, જાણી જોઈને, આવીને વગેરે કિયાઓ પહેલાં થયેલી છે આ અર્થમાં કૃદંત કિયાવિશેષણ તરીકે વપરાયું છે.

★ યાદ રાખો : સંબંધક ભૂતકૃદંત કિયાપદ તરીકે આવતું નથી. એ માત્ર કિયાવિશેષણ રૂપે જ આવે છે.

6. હેતુર્થ કૃદંત

★ આ કૃદંત કિયાનો ઉદ્દેશ કે હેતુ દર્શાવે છે ને કિયાવિશેષણ તરીકે વપરાય છે. આ કૃદંતરૂપ કિયાપદ તરીકે વપરાતું નથી. આ કૃદંતનો પ્રત્યય 'વા' કે વાને છે.

● દા.ત. : વિદ્યાર્થીઓ રમતો રમવા મેદાનમાં જાય છે.

(શા હેતુર્થી જાય છે? રમવાના હેતુથી)

કર્તરિ, કર્મણિ, ભાવે રચના

કર્તરિ વાક્યરચના

- ★ કિયાપદનો ઉપયોગ કરીને અનુલક્ષીને કરવામાં આવે ત્યારે કર્તરિ વાક્યરચના કહેવાય. કરીના પુરુષ, લિંગ અને વચનમાં જેમજેમ ફેરફાર થાય તેમ તેમ કિયાપદના રૂપમાં પણ ફેરફાર થાય છે. અહીં કર્તા નામાર્થે પહેલી વિભક્તિમાં હોય છે.
- દા.ત. : હું બણું હું. તે ભાગે છે. (કરીના પુરુષ પ્રમાણે ફેરફાર) તે જમતો હતો. મીનું જમતી હતી. (કરીના લિંગ પ્રમાણે ફેરફાર) પ્રિયક અને મયક અમેરિકા જવાના છે. (કરીના વચન પ્રમાણે ફેરફાર)

યાદ રાખો :

1. કર્તા સાથે જોડાયેલા 'થી', 'વડે', 'દ્વારા', 'તરફથી' જેવા પ્રત્યય કે નામયોગી કાઢી નાખવાથી કર્તરિ વાક્યરચના બને છે.

કર્મણિ વાક્ય : 1. દાદાથી ઊઠાતું નથી.

2. મેનેજર તરફથી વિદ્યાર્થીઓને ઈનામ અપાયા.

કર્તરિ વાક્ય : 1. દાદા ઊઠાતા નથી.

2. મેનેજર વિદ્યાર્થીઓને ઈનામ આયા.

2. મને, મારાથી, ને જગ્યાએહું, મેં,

તારાથી ને બદલે 'તું'

અમારાથી ને સ્થાને અમે

તમારાથી ને સ્થાને 'તમે' મૂકવાથી કર્તરિવાક્ય બનશે.

કર્મણિ વાક્ય : 1. મારાથી પરીક્ષા અપાઈ નહિ.

2. તારાથી આ કામ કરાશે નહિ.

3. અમારાથી રડી પડાયું.

4. તમારાથી ચોરી ન કરાય.

કર્તરિ વાક્ય : 1. મેં પરીક્ષા આપી નહિ. | 3. અમે રડી પડયા.

2. તું આ કામ કરીશ નહિ. | 4. તમે ચોરી ન કરો.

કર્મણિ વાક્યરચના

- ★ કિયાપદનો ઉપયોગ કર્મને અનુલક્ષીને કરવામાં આવે ત્યારે કર્મણિ વાક્યરચના બને છે. કર્મના લિંગ અને વચન પ્રમાણે કિયાપદમાં ફેરફાર થાય છે. આ પ્રયોગમાં કર્તા ત્રીજી, ગોલી કે પાંચમી વિભક્તિમાં હોય છે.

- દા.ત. : 1. મારાથી પુસ્તક વંચાય છે. (કર્તા પાંચમી વિભક્તિમાં છે.)
2. રાખા વડે પુસ્તક અપાયું નહિ. (કર્તા ત્રીજી વિભક્તિમાં છે.)
3. ઈલાથી કાવ્યો વંચાયાં. (કર્તા પાંચમી વિભક્તિમાં છે.)

ધ્યાન રાખો :

1. કર્તા ગૌણ હોય છે ને વાક્યમાં કર્મની જ પ્રધાનતા હોય છે. સકર્મક કિયાપદવાળી (એમાં કર્મ હોય જ) રચના હોય.

- દા.ત. : પિનલથી પાંચ રૂપિયામાં પેન ખરીદાઈ.

2. કર્તા સાથેથી, વડે, દ્વારા, તરફથી જેવા પ્રત્યયો કે નામયોગી આવતાં કર્મણિ વાક્યરચના બને.

- દા.ત. :

કર્તરિ વાક્ય : 1. વિપુલે બધા પ્રયત્નો કર્યા.

2. મોહને ચોરી કરી.

કર્મણિ વાક્ય : 1. વિપુલથી બધા પ્રયત્નો કરાયા.

2. મોહન વડે ચોરી કરાઈ.

ભાવે વાક્યરચના

- ★ કિયાપદનો ઉપયોગ કર્તરિ અને કર્મણિ રચનામાં ન થયો હોય ત્યારે ભાવેવાક્ય થાય છે. કરીની વિભક્તિ કર્મણિ પ્રયોગ પ્રમાણે હોય છે. અહીં અકર્મક કિયાપદ (વાક્યમાં કર્મ હોતું નથી) વપરાયું છે. એમાં કિયાના ભાવની પ્રધાનતા હોય છે.

- દા.ત. : 1. માંહનથી ખવાય છુ.

2. માનાથી લખાયું.

પ્રેરક અને પુનઃપ્રેરક વાક્યરચનાઓ :

પ્રેરક વાક્યરચના

- ★ કિયાપદમાં જ્યારે કિયા કરવાનો, પ્રેરવાનો અર્થ હોય ત્યારે વાક્યરચના પ્રેરક બને છે.

સાદી રચના	પ્રેરક રચના
● દાત. : હાથી ચલે છે. મેં એને પુસ્તક આપ્યું મેં એને પુસ્તક અપાયું.	મહાવત હાથીન ચલાવ છે. માણિક્ય માટે હાથીન ચલાવ છે.

- ★ સાદી વાક્ય પરથી પ્રેરક વાક્યરચના બનાવવા માટે.....

- (૧) ધાતુનું પ્રેરકરૂપ મૂકીને તથા પ્રેરિત કર્તા ઉમેરીને થાય.
(૨) મૂળ ક્રતીને પ્રેરિત બનાવીને થાય.

યાનમાં રાખવાની બાબતો :

1. પ્રેરક વાક્ય બનાવતાં મૂળ ધાતુને 'આવ', 'અવ', 'રાવ', 'ડાવ', 'આડ', 'વાડ', 'એડ', 'ઓળ' પ્રત્યયો લાગીને પ્રેરક ધાતુઓ બને છે.

● દાત. : ચાલ → ચલાવ ('આવ' પ્રત્યય)
ધરા → ધરાવ ('આવ' પ્રત્યય)
ચાખ → ચખાડ ('આડ' પ્રત્યય)
ખસ → ખસેડ ('એડ' પ્રત્યય)
હીંચ → હીંચોળ ('ઓળ' પ્રત્યય)
ખાય → ખવડાવ ('આવ' પ્રત્યય)
વધ → વધડું ('આર' પ્રત્યય)

2. પ્રેરક વાક્યરચનાના ક્રતીને સ્થાને પ્રેરકકર્તા હોય છે અને પ્રેરિતકર્તા 'પાસે' નામયોગી કે 'ને' અનુગ સાથે આવે છે.

મૂળ વાક્યરચના : મીના પૂજા કરે છે.

પ્રેરક વાક્યરચના : બા મીના પાસે પૂજા કરાવે છે.
પ્રેરક કર્તા પ્રેરિત નામયોગી સાથે પ્રત્યય

સાદી વાક્યરચના	પ્રેરક વાક્યરચના
1. શિક્ષક લખે છે.	1. શિક્ષક લખાવે છે.
2. રીન્કુ દોડે છે.	2. રીન્કુ દોડાવે છે.
3. મીનુ લાલરૂં ગાય છે.	3. મીનુ લાલરૂં ગવડાવે છે.

પુનઃપ્રેરક વાક્યરચના

- ★ એક વખત જે પ્રેરકરૂપ તૈયાર થયું તેને ફરીથી બીજો પ્રેરક પ્રત્યય લગાડી એટલે કે પુનઃ બીજો પ્રત્યય લગાડી પ્રેરકરૂપ પણ પ્રેરકરૂપ બનાવવામાં આવે તેને પુનઃપ્રેરક અથવા તો હિતીય પ્રેરક તરીકે ઓળખાવવામાં આવે છે. ● દાત. :

સાદી વાક્યરચના	પ્રેરક રચના	પુનઃપ્રેરક રચના
રમ	રમાડ	રમાડાવ
આપ	અપાવ	અપાવડાવ
લખ	લખાવ	લખાવડાવ
દોડ	દોડાવ	દોડાવડાવ
પડ	પડાવ	પડાવડાવ
ચાલ	ચલાવ	ચલાવડાવ
ખસ	ખસેડ	ખસેડાવ
પૂછ	પુછાવ	પુછાવડાવ

- ★ પુનઃપ્રેરક વાક્યરચનામાં એક વ્યક્તિ, બીજી વ્યક્તિ દ્વારા ત્રીજી વ્યક્તિને કિયા કરવાની પ્રેરણ આપે છે.

- દાત. : હું રમા દ્વારા મોહિની પાસે કામ કરવું છું,

યાદ રાખો :

- ★ પુનઃપ્રેરક માટે કોઈ નવા પ્રત્યયો લગાડવામાં આવતા નથી. એના એ જ પ્રત્યયો એમાં પ્રયોગય છે. પણ શરત એટલી કે એકનો એક પ્રત્યય ફરીવાર વપરાતો નથી.

1. જો પ્રેરકમાં 'આવ' પ્રત્યય હોય તો પુનઃપ્રેરકમાં ફરીથી એ ન આવે પણ 'ગવ' એવો પ્રત્યય આવે. જો પ્રેરકમાં 'આડ' પ્રત્યય પ્રયોગય હોય તો ત્યાં પછી 'આવ' એવો પ્રત્યય આવે.

- દાત. : દોડ - દોડાવ → દોડાવડાવ (આવ, ડાવ)
રમ - રમાડ → રમાડાવ (આડ, આવ)

2. ઉપરોક્ત ઉદાહરણ પરથી ખ્યાલ આવશે કે સાદી રચના પરથી પ્રેરકરચના અને પ્રેરકરચના પરથી પુનઃપ્રેરક રચના બનાવવા કેટલીકવાર પ્રત્યય લાગતા પહેલાં કિયાપદના વણોમાં કેટલાક આદેશમૂલક અને સંખ્યમૂલક ફેરફાર થાય છે.

- દાત. : 'અ' નો 'આ' = પડ → પાડ
'અ' નો 'ઓ' = ભળ → ભેળજ
'અ' નો 'ઓ' = ઢળ → ઢાળ
'ઉ' નો 'ઓ' = ફૂલ → ફાળ
'ઉ' નો 'આ' = પી → પા